आर्थिक नियम एवं उनकी प्रकृति

[ECONOMIC LAWS & THEIR NATURE]

प्रारम्भिक (Introductory)

ऐसे सभी नियम जो **कारण** (cause) एवं **परिणाम** (effect) के सम्बन्ध पर आधारित होते हैं, **वैज्ञानिक नियम** (Scientific laws) कहलाते हैं। इन नियमों के द्वारा किन्हीं भी दो परिस्थितियों एवं अवस्थाओं में किसी 'कारण' एवं उसके 'परिणाम' की व्याख्या की जा सकती है। भौतिक विज्ञान के नियमों को इसी विशेषता के कारण वैज्ञानिक नियमों की श्रेणी में रखा जाता है। अर्थशास्त्र भी एक विज्ञान है क्योंकि अर्थशास्त्र में भी आर्थिक कारण तथा आर्थिक परिणामों के बीच सम्बन्ध स्थापित किये जाते हैं। उदाहरणार्थ माँग का नियम वस्तु की कीमत एवं माँगी जाने वाली मात्रा के सम्बन्ध को बताता है। वस्तु की कीमत के बढ़ने पर माँग घटती है तथा वस्तु की कीमत घटने पर माँग बढ़ती है। इस प्रकार माँग का नियम 'कारण' एवं 'परिणाम' के पारस्परिक सम्बन्ध को बताता है। इसी आधार पर आर्थिक नियमों को वैज्ञानिक नियमों की संज्ञा दी जा सकती है।

आर्थिक नियमों की परिभाषाएँ

(DEFINITIONS OF ECONOMIC LAWS)

'कारण' एवं 'परिणाम' की वैज्ञानिक अवधारणा पर आधारित होने के कारण आर्थिक नियमों को वैज्ञानिक नियम माना जाता है। इसके अतिरिक्त इन नियमों का सम्बन्ध मनुष्य के व्यवहार से होता है। अत: ये नियम मूलत: कुछ दी गयी परिस्थितियों में मानवीय प्रवृत्तियों (human tendencies) को दर्शाते हैं।

इन नियमों को कुछ अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया है—

''आर्थिक नियम अथवा आर्थिक प्रवृत्तियों के कथन वे सामाजिक नियम हैं, जो कि आचरण की उन शाखाओं से सम्बन्धित हैं जिनमें मुख्य सम्बन्धित उद्देश्यों की दृढ़ता को मौद्रिक मूल्य द्वारा मापा जा सकता है।''[1]

—मार्शल

''आर्थिक नियम मानव व्यवहार के विषय में उन समानताओं के कथन हैं जिनका सम्बन्ध असीमित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सीमित तथा वैकल्पिक उपयोग वाले साधनों से है।''[2]

—रॉबिन्स

मार्शल की परिभाषा आर्थिक नियम के तीन लक्षणों को दर्शाती है—

(i) आर्थिक नियम सामाजिक नियम होते हैं।

(ii) इनका सम्बन्ध मानव आचरण से है।

---

1. "Economic laws or statement of economic tendencies are those social laws which relate to those branches of conduct in which the strength of the motives chiefly concerned can be measured by money price." —*Marshall*
2. "Economic laws are statement of uniformities about human behaviour concerning the disposal of scarce means with alternative uses for the achievements of ends that are unlimited." —*Robbins*

Scanned with CamScanner

(iii) आर्थिक नियम मानवीय व्यवहार के केवल उसी पहलू का अध्ययन करते हैं जिसे मुद्रा के मापदण्ड द्वारा मापा जा सकता है।

रॉबिन्स द्वारा दी गई परिभाषा मार्शल की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत दृष्टिकोण पर आधारित है। रॉबिन्स ने आर्थिक नियमों का आधार सीमित साधनों तथा असीमित आवश्यकताओं के मध्य स्थापित सम्बन्ध को माना है।

आर्थिक नियमों की विशेषताएँ
(CHARACTERISTICS OF ECONOMIC LAWS)

अथवा

आर्थिक नियमों की प्रकृति
(NATURE OF ECONOMIC LAWS)

1. आर्थिक नियम काल्पनिक होते हैं (Economic Laws are Hypothetical)

अर्थशास्त्र के अधिकांश नियमों के साथ यह वाक्यांश **'यदि अन्य बातें समान रहें'** (*Ceteris Paribus*) जुड़ा रहता है जिसके आधार पर आर्थिक नियमों को काल्पनिक नियमों की संज्ञा दी जाती है।

सेलिगमैन (Seligman) के शब्दों में, **"अर्थशास्त्र के नियम अनिवार्य रूप से काल्पनिक होते हैं क्योंकि प्रत्येक आर्थिक नियम के साथ 'अन्य बातें समान रहें' का वाक्यांश जुड़ा रहता है।"**[1]

परन्तु उपर्युक्त आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि आर्थिक नियम 'अवास्तविक' एवं 'अवैज्ञानिक' हैं। अन्य बातों के समान रहने की शर्त केवल आर्थिक नियमों तक ही सीमित नहीं होती बल्कि अन्य सभी भौतिक विज्ञानों के सम्बन्ध में भी यही विशेषता पायी जाती है। उदाहरण के लिए भौतिकशास्त्र के प्रसिद्ध **'गुरुत्वाकर्षण नियम'** (Law of Gravitation) के अनुसार सभी वस्तुएँ आकाश की ओर फेंके जाने पर नीचे पृथ्वी की ओर गिरती हैं। किन्तु गुरुत्वाकर्षण का यह नियम भी अनेक पूर्व-निश्चित मान्यताओं के स्थिर रहने की दशा में ही क्रियाशील होता है। जैसे ऊपर फेंकी गई वस्तु पृथ्वी से एक निश्चित दूरी से अधिक दूरी पर न हो, कोई अन्य विपरीत शक्ति उसे अन्य दिशा में आकर्षित न करती हो, वायु का एक निश्चित दबाव बना रहे आदि। यदि किसी गुब्बारे में हवा से हल्की गैस भरकर उसे आकाश में फेंका जाए तो गुरुत्वाकर्षण का नियम क्रियाशील नहीं होगा क्योंकि गुब्बारा पृथ्वी पर नीचे वापस न आकर ऊपर ही उठता जायेगा। स्पष्ट है कि गुरुत्वाकर्षण नियम की कार्यशीलता कुछ दी गई दशाओं से जुड़ी है। इसी प्रकार रसायनशास्त्र का यह नियम है कि यदि हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को 2 : 1 के अनुपात में मिलाया जाए तो मिश्रण से पानी बनता है, यह नियम तभी सत्यापित होता है जब एक निश्चित तापमान एवं वायु का निश्चित दबाव सुनिश्चित किया जाए।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि यदि आर्थिक नियम 'अन्य बातें यथावत् रहें' वाक्यांश के साथ जुड़े होने के कारण काल्पनिक हैं तो यह कल्पना भौतिक विज्ञानों के नियमों में भी पायी जाती है। अतः केवल आर्थिक नियमों को ही काल्पनिक नियमों की संज्ञा नहीं दी जा सकती। काल्पनिकता के दोष का अंश आर्थिक नियमों की भाँति भौतिक विज्ञानों के नियमों में भी विद्यमान है। अन्तर केवल इतना है कि आर्थिक नियमों में कल्पना का अंश भौतिक विज्ञानों की अपेक्षा थोड़ा अधिक पाया जाता है। रॉबिन्स के शब्दों में, **"इस दृष्टि से आर्थिक नियम अन्य वैज्ञानिक नियमों की ही भाँति हैं तथा उनमें भी सन्देह का इतना ही कम अंश पाया जाता है।"**[2]

---

1. "Economic laws are essentially hypothetical. All economic laws contain qualifying clause 'other things being equal." —*Seligman*
2. "In this sense they are on the same footing as other scientific laws and are as little capable of suspension." —*Robbins*

Scanned with CamScanner

2. आर्थिक नियम अनिश्चित तथा अपूर्ण हैं (Economic Laws are Indefinite and Inexact)

आर्थिक नियम, आर्थिक प्रवृत्तियों के केवल कथन मात्र (mere statements) होते हैं तथा ये निश्च भौतिक विज्ञान के नियमों की भाँति निश्चित नहीं होते और न ही ये किसी 'कारण' के 'परिणाम' के निश्चित य अनिवार्य रूप से घटित होने का दावा करते हैं। आर्थिक नियम केवल घटना के परिणाम की सम्भावना (probability) को बताते हैं। **इस प्रकार आर्थिक नियम केवल गुणात्मक पक्ष** (qualitative aspect) **की व्याख्या करते हैं, परिमाणात्मक पक्ष** (quantitative aspect) **की नहीं।** उदाहरण के लिए, रसायनशास्त्र में दी गई दशाओं में यदि हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को 2 : 1 के अनुपात में मिलाया जाता है तो पानी बनता है। यदि हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की मिलने वाली मात्रा दुगनी कर दी जाये तो **निश्चित रूप** से पानी की मात्रा भी दुगनी हो जाएगी किन्तु इस प्रकार की निश्चितता आर्थिक नियमों में उपस्थित नहीं होती। माँग के नियम के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि वस्तु की कीमत आधी कर देने पर माँग बढ़कर दुगनी हो जाएगी। माँग का नियम केवल 'कारण' एवं 'परिणाम' की दिशा का बोध कराता है।

3. आर्थिक नियम सापेक्षिक होते हैं (Economic Laws are Relative)

आर्थिक नियमों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(क) सार्वभौमिक नियम (Universal Laws),

(ख) सापेक्षिक नियम (Relative Laws)।

कुछ आर्थिक नियम ऐसे होते हैं कि वे सभी परिस्थितियों, स्थानों एवं व्यक्तियों पर लगभग समान रूप से लागू होते हैं क्योंकि इन नियमों का सम्बन्ध मानव स्वभाव तथा मानव प्रकृति से होता है। इस प्रकार अर्थशास्त्र के उपभोग माँग एवं पूर्ति सम्बन्धी नियम भी सार्वभौमिक माने जाते हैं।

इसके विपरीत अर्थशास्त्र में अनेक नियम सापेक्षिक कहलाते हैं क्योंकि इन नियमों की कार्यशीलता स्थान-विशेष तथा परिस्थिति-विशेष में ही दृष्टिगोचर होती है। उदाहरण के लिए, बैंकिंग, मुद्रा, चलन, उद्योग व्यापार आदि से सम्बन्धित नियम इसी श्रेणी में आते हैं। इन नियमों का निर्माण विभिन्न स्थानों पर समय के विभिन्न अवधियों में प्रचलित आर्थिक संगठनों के स्वरूप के आधार पर किया जाता है। इस प्रकार आर्थिक नियम ऐतिहासिक-सापेक्षिक (Historic-Relative) अथवा संस्थात्मक (Institutional) होते हैं जो ऐतिहासिक दशाओं अथवा संस्थाओं के परिवर्तित होने पर बदल जाते हैं।

Scanned with CamScanner